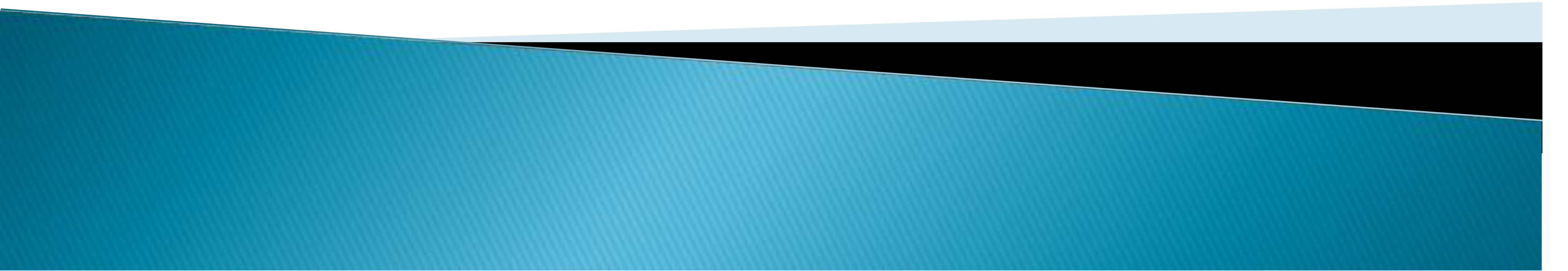
विसर्गसन्धिः

-अरुण पाण्डेय



॥ विसर्गसन्धिः ॥

- किन्ही दो वर्णों अत्यन्त समीपता(जुडाव) को सन्धि कहा जाता है।
- सन्धि यदि स्वरों के स्थान पर हो तो स्वर सन्धि , व्यञ्जनों के स्थान पर हो तो व्यञ्जन सन्धि कही जाती है। विसर्ग के स्थान पर हो तो विसर्ग सन्धि कही जाती है।
- विसर्ग सन्धि में उसकी ८ गतियां होती हैं यह ध्यातव्य है। जैसे –

ओभावश्च विवृत्तिश्च शषसा रेफ एव च।

जिह्वामूलमुपध्मा च गतिरष्टविधोष्मणः ॥॥

- तात्पर्य है कि विसर्ग की आठ रूप देखने को मिलते हैं- ओ, लोप, श्, ष्, स्, र्, जिह्वामूल, उपध्मानीय।
- ओ– रामो गच्छति , लोप – बालका हसन्ति , श् – रामश्शेते , ष् – रामष्टीकते,
- स्- विष्णुस्त्राता, र् – हरिरपि, जिह्वामूल- रामः करोति , उपध्मानीय- रामः पठति।

सत्वसन्धि:

- **सूत्र – विसर्जनीयस्य स:**
- विसर्ग के बाद यदि खर् प्रत्याहार का कोई भी वर्ण आता हो तो विसर्ग के स्थान पर "स्" होता है। खर् –क् ख् च् छ् ट् ठ् त् थ् प् फ् श् ष् स्।
- विष्णु: त्राता > विष्णुस् त्राता = विष्णुस्त्राता।
- बाल: थूत्करोति > बालस् थूत्करोति = बालस्थूत्करोति।
- **सूत्र – वा शरि**
- विसर्ग के बाद यदि शर् (श् ष् स्) हो तो विसर्ग के स्थान पर विकल्प से विसर्ग होता है। विसर्ग के अभाव में "विसर्जनीयस्य स:" से स् होगा।
- हरि: शेते = हरि: शेते। **अथवा**। > हरिस् शेते > हरिश्शेते –स्तो: श्चुना श्चु:।
- राम: षष्ठ: =राम: षष्ठ:। **अथवा**। रामस् षष्ठ: > रामष्षष्ठ:- ष्टुना ष्टु:।
- सर्प: सरति = सर्प: सरति। **अथवा**। सर्पस् सरति> सर्पस्सरति।

उत्वसन्धिः

- **सूत्र – ससजुषो रुः ।**
- पदान्त(शब्द के अन्त) में स्थित स् और सजुष् के (ष्) के स्थान पर रु होता है ।
- **सूत्र – अतो रोरप्लुतादप्लुते ।**
- ह्रस्व अ के बाद आने वाले रु(र्) के स्थान पर उ होता है यदि पर में ह्रस्व अ हो तो ।
- शिव + सु (स्) + अर्च्यः
- शिव+ रु(र्) + अर्च्यः — ससजुषो रुः ।
- शिव + उ + अर्च्यः — अतो रोरप्लुतादप्लुते ।
- शिवो+अर्च्यः — आद् गुणः ।
- शिवोऽर्च्यः — एङः पदान्तादति ।

- **सूत्र – हशि च ।**
- ह्रस्व अ के बाद आने वाले रु(र्) के बाद यदि हश् प्रत्याहार का कोई वर्ण हो तो रु(र्) के स्थान पर उ हो जाता है ।
- शिव+ सु(स्) +वन्द्यः
- शिव+ रु(र्) + वन्द्यः — ससजुषो रुः ।
- शिव + उ + वन्द्यः — हशि च ।
- शिवो वन्द्यः — आद् गुणः ।

यत्व (विसर्ग लोप)

- सूत्र – भोभगोऽघोऽपूर्वस्य योऽशि ।
- भो, भगो, अघो तथा अ के बाद आने वाले रु(र्) के स्थान पर "य्" हो जाता है ।
- देवास् इह > देवा रु(र्) इह > देवा य् इह । इस स्थिति में लोपः शाकल्यस्य से य् का शाकल्य ऋषि के मत में लोप होकर **देवा इह** सिद्ध होगा । तथा अन्य आचार्यों के मत में य् का लोप नहीं होगा और **देवायिह** रूप सिद्ध होगा ।
- भोस् , भगोस्, अघोस् के रु को य् करने के बाद –

- सूत्र – हलि सर्वेषाम् ।
- हल्(व्यञ्जन) वर्ण बाद में हो तो भोस् भगोस् अघोस् तथा अपूर्व के य् का सभी के मत में लोप हो जाता है।

भोस् देवाः	भगोस् नमस्ते	अघोस् याहि	
भो रु(र्) देवाः	भगो र् नमस्ते	अघो र् याहि	ससजुषो रुः।
भो य् देवाः	भगो य् नमस्ते	अघो य् याहि	भोभगो.....।
भो देवाः	भगो नमस्ते	अघो याहि	हलि सर्वेषाम्

रेफविधानसन्धि

- **सूत्र – रोऽसुपि।**
- अहन् के न् के स्थान पर र् हो जाता यदि बाद में सुप्(सु औ जस् आदि २१) प्रत्यय न हो तो।
- अहन् अहः अहन् गणः
- अहर् अहः अहर् गणः रोऽसुपि।
- अहरहः अहर्गणः वर्णसम्मेलन।

- **सूत्र – रो रि ।**
- रेफ (र्) के बाद यदि रेफ(र्) हो तो पहले रेफ का लोप होता है ।
- **सूत्र – ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः ।**
- ढ् अथवा र् का लोप हुआ हो तो उससे पूर्व में स्थित अण्(अ इ उ) दीर्घ हो जाता है ।
- पुनर्+रमते हरिर्+रम्यः शम्भुर्+राजते
- पुन+रमते हरि+रम्यः शम्भु+राजते रो रि ।
- पुना+रमते हरी+रम्यः शम्भू+राजते ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः ।

✓ **तृढ्+ढः = तृढः , वृढ्+ढः = वृढः इन दोनों उदाहरणों में पूर्व में अण् नहीं है अतः दीर्घ नही हुआ ।**

✓ **मनस्+ रथः में स् को रु करने के बाद मनर् रथः होने पर रो रि से पूर्व र् का लोप प्राप्त हुआ । परन्तु -**

- **सूत्र – विप्रतिषेधे परं कार्यम् ।**
- दो समान बल वाले सूत्रों का विरोध हो जाए तो पर (बाद) के सूत्र का कार्य करना चाहिए । इस नियम से **हशि च – ६.१.११४** तथा **रो रि ८.३.१४** इन दोनों सूत्रों में बाद के सूत्र **रो रि** से **मनर् रथः** के रेफ का लोप प्राप्त हुआ । परन्तु **पूर्वत्रासिद्धम्** सूत्र के नियम से रो रि के असिद्ध होने के कारण **हशि च** से उत्व ही होगा ।
- मनस् + रथः
- मन + रु (र्) + रथः — ससजुषो रुः ।
- मन + उ + रथः — हशि च ।
- मनोरथः — आद् गुणः ।

सुलोप

सूत्र – एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि ।

एतद् और **तद्** के बाद आने वाले **सु** का लोप होता है । यदि वह **क** के तथा **नञ्समास** के बाद न हो तो ।

एतद् सु विष्णुः	तद् सु शम्भुः	
एस सु विष्णुः	स सु शम्भुः	तदोः सः सावनन्त्ययोः
एष सु विष्णुः	स सु शम्भुः	आदेशप्रत्यययोः
एष विष्णुः	स शम्भुः	एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि ।

एषको रुद्रः में क के बाद होने के कारण तथा असः शिवः में नञ्समास के बाद होने के कारण सु का लोप नहीं होगा ।

- सूत्र-सोऽचि लोपे चेत्पादपूरणम्
- स्वर वर्ण बाद में हो तो स के सु का लोप होता है यदि लोप होने पर ही पादपूर्त्ति होती हो तो।
- स सु+इमामविड्ढि स सु एष दाशरथी रामः
- स + इमामविड्ढि स एष दाशरथी रामः सोऽचि लोपे.....।
- सेमामविड्ढि ------------------------ आद् गुणः
- ------------ सैष दाशरथी रामः वृद्धिरेचि
- इन दोनों उदाहरणों में यदि सु का लोप नहीं होता तो छन्द के नियमानुसार पादपूर्त्ति सम्भव नहीं था।

पूर्ववर्ण	उत्तरवर्ण	आदेश	सूत्र	
स्वर वर्ण	खर् प्रत्याहार	स् (श् ष्)	विसर्जनीयस्य सः	विष्णुस्त्राता हरिस्त्राता इत्याद
स्वर वर्ण	श् स् ष्	विकल्प से स्(श् ष्)	वा शरि	हरिः शेते हरिश्शेते
ह्रस्व अ	अ	उ (गुण)	अतो रोरप्लुतादप्लुते	शिवोऽर्च्यः
ह्रस्व अ	हश्	उ (गुण)	हशि च	शिवो वन्द्यः
भो , भगो, अघो, अवर्ण	अश्/ हल्	य् = लोप	भोभगोऽघोऽपूर्वस्य योऽशि	भो देवाः, अघो नमस्ते देवा इह
अहन् (न्)	असुप् (सुप् भिन्न)	न् के स्थान पर र्	रोऽसुपि	अहरहः, अहर्गणः
र्	र्	पूर्व रलोप तथा अण् का दीर्घ	रो रि , ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः	पुना रमते, शम्भू राजते, हरी रम्यः
एतद्/ तद्	हल्	सुलोप	एतत्तदोः सुलोऽपो-ऽकोरनञ्समासे हलि	स विष्णुः एष शम्भुः
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

धन्यवादः

